खंड-'क'

1. (क) (i)
(ख) (i)
(ग) (ii)
(घ) (i)
(ङ) (i)

2. (क) (i)
(ख) (iii)
(ग) (i)
(घ) (ii)
(ङ) (ii)

3. (क) (iii)
(ख) (i)
(ग) (ii)
(घ) (iii)
(ङ) (i)

4. (क) (ii)
(ख) (ii)
(ग) (iv)
(घ) (iii)
(ङ) (iv)

खंड-'ख'

5. (क) मिश्र वाक्य
(ख) यह वही नहर है जिसे अनेक गुमनाम और अनपढ़ माने गए लोगों ने बनाया था।
अथवा
इस नहर को ऐसे अनेक लोगों ने बनाया जो गुमनाम और अनपढ़ माने गए।
(ग) उन्हें नमक कर एक सामान्य-सा मुद्दा लगता था।

6. (क) दादाजी ने हम सबको पुस्तकें दीं।
(ख) वह चल नहीं सकता / पाता।
(ग) उससे तो उठा भी नहीं जाता / जा सकता।
(घ) उनके द्वारा उछलकर डोर पकड़ ली गई।

7. कब्रिस्तान की - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक छोटे-मोटे - गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'तनाव' विशेष्य का विशेषण।
होते हैं - सकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्तृवाच्य।
मुझे - पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग / स्त्रीलिंग, कर्ता कारक, 'शामिल होना पड़ा' क्रिया का कर्ता।
(व्याकरणिक कोटि (भेद सहित) तथा अन्य में से किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)
-जिलाधिकारी की - जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक
प्रमुख - गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'लोग' विशेष्य का विशेषण
बुलाया गया - सकर्मक क्रिया, भूतकाल, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मवाच्य।
मैं - पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'शामिल था' क्रिया का कर्ता
(व्याकरणिक कोटि (भेद सहित) तथा अन्य में से किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)
वृद्ध - गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, 'डॉक्टर' विशेष्य का विशेषण
मैंने - पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग / स्त्रिलिंग, कर्ता कारक, 'रखा' क्रिया का कर्ता
इस तरह - रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'रखा' क्रिया का क्रियाविशेषण हो - सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, भूतकाल, एकवचन।
(व्याकरणिक कोटि (भेद सहित) तथा अन्य में से किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

8. (क) रौद्र रस

(ख) स्वयं करे
(ग) रति
(घ) वीर रस

खंड-'ग'

9. (क) -बिस्मिल्ला खाँ विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक थे।
- बालाजी मंदिर वे प्रतिदिन रियाज़ के लिए जाते थे।
(ख) - रसूलन और बतूलन बाई का गाना सुनकर खाँ साहब को खुशी मिलती थी।
- उन्हें वहाँ कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा अलग-अलग प्रकार के बोल-बनाव सुनने को मिलते थे।
(ग) - शहनाई वादन का अभ्यास

10. (क) आधुनिक विचारधारा, समाज-सेवा, देश के लिए कार्य करना, संवेदनशीलता, शिक्षा और प्रतिभा विकास के अवसर देना। (कोई दो बिंदु अपेक्षित)
(ख) - समाज और देश के हित में साहसपूर्वक विरोध प्रदर्शित करके
- चर्चापरक बातचीत द्वारा प्रचार-प्रसार करके
(ग) - प्राकृत उस समय आम बोलचाल की भाषा थी।
- बौद्ध व जैन ग्रंथों की रचना प्राकृत में ही हुई।
- भगवान बुद्ध और उनके शिष्यों ने उपदेश भी प्राकृत में ही दिए।
- विद्वानों ने गाथा सप्तशती, कुमारपालचरित, सेतुबंध महाकाव्य जैसे ग्रंथों की रचना प्राकृत में ही की।
- जिस प्रकार आज हिंदी, बांग्ला, मराठी आदि सुशिक्षितों की भाषा है, उसी प्रकार उस समय प्राकृत थी। (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)
- सभ्यता संस्कृति का परिणाम है।
- व्यक्ति विशेष द्वारा योग्यता अथवा प्रवृत्ति से जिस नए तथ्य या वस्तु की खोज / आविष्कार हुआ, वह सभ्यता है।
(घ) - सभ्यता संस्कृति का परिणाम है।
- व्यक्ति विशेष द्वारा योग्यता अथवा प्रवृत्ति से जिस नए तथ्य या वस्तु की खोज /आविष्कार हुआ, वह सभ्यता है।
(ङ) ऐसे मनीषी ने ही पेट भरा और तन ढका होने पर भी सहज प्रवृत्ति से जन कल्याण हेतु ज्ञान की खोज की।

11. (क) - मृगतृष्णा से अभिप्राय है रेत की चमक में पानी जैसा भ्रम, मिथ्या प्रतीति, छलावा आदि।
- यहाँ मृगतृष्णा जीवन में यश, मान, वैभव आदि की प्राप्ति की इच्छा और प्रयास को कहा गया है।
(ख) - सुख-दुख जीवन की स्वाभाविक और क्रम से आने-जाने वाली स्थिति है।
- हर चाँदनी रात अर्थात सुख के बाद अँधेरी काली रात अर्थात दुख आता है।
(ग) अतीत की सुखद स्मृतियाँ।

12. (क) वीर, क्रोधी, बाल-ब्रह्मचारी, अहंकारी, क्षत्रिय कुल के विरोधी, कठोर वाणी। (किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित)
(ख) साहस के साथ विनम्रता का होना आवश्यक है -
- विनम्रता के अभाव में साहस और शक्ति अनियंत्रित और विनाशकारी बन जाती हैं।
- जैसे लक्ष्मण और परशुराम में विनम्रता का अभाव था तो उन्हें सभा में विरोध का सामना करना पड़ा।
-जबकि राम में साहस शक्ति के साथ विनम्रता भी थी। सभा ने उनका सम्मान किया।
(छात्रों के तर्कपूर्ण विचार स्वीकार्य)
(ग) ये भ्रामक शब्द हैं, जिनसे स्त्री को सुख का भ्रम होता है। वस्तुतः समाज वस्त्र और आभूषण की बेड़ियों में जकड़कर स्त्री के अस्तित्व को सीमाओं में बाँध देता है।
(घ) - समाज में लड़की के संवेदनशीलता, भावुकता, प्रेम आदि स्वाभाविक गुणों को कमज़ोरी मानकर उसका शोषण किया जाता है।
- बेटी को जीवन का अनुभव नहीं है अतः अनुभवी माँ उसे भावी परिस्थितियों के प्रति सचेत कर दृढ़ता से उनका सामना करने की प्रेरणा देती है।
(ङ) संगतकार निस्वार्थ रूप से स्वयं को पृष्ठभूमि में रखकर मुख्य गायक की सफलता में योगदान देता है। उसे अपने योगदान का श्रेय लेने की कोई इच्छा नहीं होती। इसी कारण स्वयं को पीछे रखने की कोशिश में उसकी आवाज़ में हिचक-सी प्रतीत होती है।

13. स्वयं करे

खंड-'घ'

14. स्वयं करे

15. स्वयं करे

16. स्वयं करे